मेरा गौरव–मेरी हिन्दी भाषा

निशा किचलू
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

"हिन्दी हिन्द के हृदय की भाषा, जन–जन के मन की भाषा"।
पं. जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में:–"हिन्दी एक जानदार भाषा है, इसका जितना, विकास होगा, देश उतना ही आगे बढ़ेगा"।

भाषा मानवीय संस्कृति का एक अनुपम सृजन है। इसमें राष्ट्र की समस्त संस्कृति समाहित और सुरक्षित है। हमारी जीवन शैली, परंपराओं और इतिहास में भाषा का अपना विशिष्ट स्थान होता है। भाषा राष्ट्र की अस्मिता और सम्मान का प्रतीक होती है। इसलिए अपनी पहचान को बनाए रखने और अपनी संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित करने के लिये हमें अपनी भाषाओं के संवर्धन, विकास और प्रचार–प्रसार के लिये निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। हिन्दी ऐसी भाषा है जिसमें लोगों के हृदय तक पहुंचने के प्रयास में निरंतर सार्थक शब्दों के लिए प्रयोग होते रहते हैं। इस संदर्भ में मुझे आचार्य विनोबा भावे जी का एक कथन याद आता है–उन्होंने कहा था–मैं मानता हूं कि मुझे हिंदी का ज्ञान न होता तो मुझे अपने विराट देश का परिचय न मिलता–मैंने अपनी तेरह वर्षों की पदयात्रा में सब लोगों तक पहुंचने में इसी कारण सफलता प्राप्त की, क्योंकि मैंने हिंदी सरीखी सरल और सुबोध भाषा को माध्यम बनाया। इस प्रकार मैंने हिंदी की कोई सेवा नहीं की बल्कि हिंदी ने मेरी सेवा की इसलिए मैं हिंदी भाषा का बहुत कृतज्ञ हूं"।

हिन्दी विश्व की चीनी भाषा के बाद बोली जाने वाली सबसे बड़ी भाषा है। विश्व में लगभग 60 करोड़ से ज्यादा लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते व समझते हैं। हिन्दी भाषा सरल एवं आसानी से समझी जाने वाली भाषा है। इसका शब्द भण्डार काफी समृद्ध है। हिन्दी के शब्दकोश में ढाई लाख से अधिक शब्द हैं। हिन्दी के इन्हीं गुणों को ध्यान में रखते हुए 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा का सम्मान प्राप्त हुआ। हिन्दी, हिन्द–यूरोपीय परिवार की भाषा है तथा संस्कृत भाषा से जन्मी है। इसी कारण हिन्दी भाषा का शब्दकोश समृद्ध है।

किसी भी भाषा का विकास उसमें उपलब्ध ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न विधाओं और साहित्य की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। जिस भाषा में उच्च कोटि का विचार और साहित्य होगा उसकी मांग भी अधिक होगी। जिन पुस्तकों से हमें मानवीय मूल्य और ज्ञानवर्धक जानकारी मिलती है तथा जिनसे सोचने की क्षमता विकसित होती है, उनसे समाज का उत्थान होता है। हिन्दी भाषा की यही विशेषता है। भारत में ही नहीं पूरे विश्व में हिन्दी भाषा का प्रयोग बढ़ रहा है। **"वसुधैव कुटुम्बकम"** की उक्ति चरितार्थ हो रही है। ऐसे में दुनिया के सभी देश न सिर्फ अपने समाज से बल्कि अन्य देशों के लोगों की भाषा, बोली, रीति–रिवाज, संस्कृति जानने और सीखने की भी कोशिश कर रहे हैं। अनेक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। अमेरिका जैसे विकसित देशों में भी हिन्दी, भारतीय भाषाओं और भारतीय सभ्यता–संस्कृति का प्रचार–प्रसार हो रहा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है।

"वो दिन दूर नहीं जब भारत फिर से जगत गुरू बन अपने ज्ञान के प्रकाश से चारों दिशाओं को आलोकित करेगा।"

आज विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग–प्रसार निरंतर बढ़ रहा है। अपनी व्यापकता और लोकप्रियता के कारण शासन, सरकारी कार्यालयों, व्यापार, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग स्वतः ही बढ़ रहा है। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में सहायक सॉफ्टवेयरों का निर्माण

नवीनतम तकनीक को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। इंटरनेट–हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज के विश्व–बाजार में टिकने के लिए देशों के बीच प्रतियोगिता जारी है। इससे संवाद और भाषा का महत्व और बढ़ जाता है। दूसरों से उनकी तकनीकी ज्ञान हासिल करने के लिए जिस प्रकार हमें उनकी भाषा का ज्ञान होना जरूरी है, उसी प्रकार दूसरों को भी हमारी तकनीक, कला–संस्कृति के ज्ञान के लिए हमारी भाषा की जानकारी आवश्यक है। यही कारण है, अमेरिका एवं अन्य विकसित यूरोपीय देशों में न सिर्फ हिन्दी बल्कि संस्कृत, आयुर्वेद, योगा के अध्ययन और शोध के लिए वहां कई शिक्षण संस्थाएं कार्यरत हैं और लाखों विदेशी भारत में भाषा एवं अन्य विषयों के अध्ययन के लिए भारत आ रहे हैं।

"हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक और अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक भारत का गौरव बढ़ा रही है।" मुझे यह लिखते हुए बड़े गर्व व प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, कि मेरा राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की, सामान्य सरकारी कामकाज के साथ–साथ तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के विषयों की जानकारियों को सामान्य जनमानस तक पहुंचाने के उद्देश्य से पिछले 8–9 वर्षों से तकनीकी हिन्दी पत्रिका **"जल चेतना"** का सफल प्रकाशन कर रहा है, क्योंकि आज हमारे देश में समय और स्थान के अनुसार जल संबंधी समस्याएं भिन्न–भिन्न हैं। इन समस्याओं के समाधानों और उपायों की जानकारी को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य हमारी यह हिन्दी पत्रिका **जल चेतना'** कर रही है। संस्थान दिनांक 16–17 दिसंबर, 2019 को **जल संसाधन एवं पर्यावरण"** विषय पर 6वीं राष्ट्रीय जल संगोष्ठी का आयोजन भी कर रहा है, जिसकी सम्पूर्ण कार्यवाही हिन्दी में संचालित की जाएगी।

महात्मा गांधी जी के शब्दों में:– राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।"

अतः मुझे मेरी हिन्दी भाषा पर गर्व है। "हिन्दी भाषा की सरगम होठों पर रखिये हरदम।"